कौटिल्य एकेडमी

www.kautilyaacademy.com IAS • IPS • MPPSC • CJ-II

CURRENT AFFAIR

18th JULY 2023

1. रूस और चीन के बीच जापान सागर में संयुक्त युद्धाभ्यास
2. नोमैडिक एलीफेंट-23
3. कास पठार
4. भूमि सम्मान 2023

रूस और चीन के बीच जापान सागर में संयुक्त युद्धाभ्यास

- रूस और चीन जापान सागर में संयुक्त युद्धाभ्यास करने जा रहे हैं। इस युद्धाभ्यास को **"उत्तरी/इंटरेक्शन-2023"** का नाम दिया गया है।
- इसमें दोनों देशों की नौसेना के युद्धपोत और वायु सेना के लड़ाकू विमान हिस्सा लेंगे। यह पहला मौका है, जब रूस चीन के साथ किसी युद्धाभ्यास में नौसेना और वायु सेना दोनों को भेज रहा है।
- चीन के रक्षा मंत्रालय के अनुसार, एक चीनी नौ सैनिक बेड़ा, जिसमें पांच युद्ध पोत और चार जहाज-जनित हेलीकॉप्टर (ship-borne helicopters) शामिल हैं इस अभ्यास में भाग लेंगे।
- जापान सागर में ड्रिल में भाग लेने वाले दो रूसी युद्ध पोत **'ग्रोमकी'और'सोवरशेनी'** ने जुलाई 2023 के शुरुआत में शंघाई में चीनी नौ सेना के साथ निर्माण गतिविधियों (formation movements), संचार और समुद्री बचाव पर अलग-अलग प्रशिक्षण आयोजित किया था।
- जापान सागर पश्चिमी प्रशांत महासागर का एक समुद्री भाग है।
- यह समुद्र जापान द्वीप समूह, रूस के सखालिनद्वीप और एशिया महाद्वीप के मुख्य भू-भाग के बीच स्थित है।
- इस के इर्द-गिर्द **जापान, रूस, उत्तर कोरिया** और **दक्षिण कोरिया** आते हैं।

SEA OF JAPAN
(East Sea)
Russia
Sakhalin Island
Tatar Strait
Sea of Okhotsk
China
La Perouse Strait
Aniva Bay
Kuril Islands
Japan
ownership of these islands is in dispute
North Korea
Sea of Japan
(East Sea)
Pyongyang
Seoul
Yellow Sea
South Korea
Tokyo
Korea Strait
Japan
Pacific Ocean
250 mi
250 km
East China Sea

नोमैडिक एलीफेंट-23

- भारतीय दल द्विपक्षीय संयुक्त सैन्य अभ्यास **'नोमैडिक एलीफेंट 23'** के 15वें संस्करण में भाग लेगा। यह अभ्यास 17 से 31 जुलाई तक **मंगोलिया के उलानबटार** में आयोजित होने वाला है।
- इस अभ्यास के दायरे में प्लाटून स्तर की फील्ड ट्रेनिंग एक्सरसाइज (एफटीएक्स) शामिल है। अभ्यास के दौरान, भारतीय और मंगोलियाई सैनिक अपने कौशल और क्षमताओं को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई विभिन्न प्रशिक्षण गतिविधियों में शामिल होंगे।
- **नोमैडिक एलीफेंट अभ्यास** भारत का मंगोलिया के साथ एक वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो मंगोलिया और भारत में क्रमिक रूप से आयोजित किया जाता है।
- भारत मंगोलिया द्वारा वार्षिक तौर पर आयोजित खान क्वेस्ट नामक सप्ताह भर चलने वाले संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास में भी सक्रिय भागीदार है।
- इस अभ्यास का उद्देश्य सकारात्मक सैन्य संबंध बनाना, सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करना, दोनों सेनाओं के बीच अंतर-संचालन क्षमता, सौहार्द, सौहार्द और मित्रता विकसित करना है।
- इस अभ्यास के दायरे में प्लाटून स्तर की फील्ड ट्रेनिंग एक्सरसाइज (एफटीएक्स) शामिल है।

- अभ्यास के दौरान, **भारतीय और मंगोलियाई सैनिक** अपने कौशल और क्षमताओं को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई विभिन्न प्रशिक्षण गतिविधियों में संलग्न हैं। इन गतिविधियों में धीरज प्रशिक्षण, रिफ्लेक्स फायरिंग, रूम इंटरवेंशन, छोटी टीम रणनीति और रॉक क्राफ्ट प्रशिक्षण शामिल हैं। दोनों पक्षों के सैनिक एक-दूसरे के ऑपरेशनल अनुभव से सीखेंगे।
- **नोमैडिक एलीफेंट-23 अभ्यास** भारतीय सेना और मंगोलियाई सेना के बीच रक्षा सहयोग में एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगा जो दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को और बढ़ावा देगा।
- अभ्यास का प्राथमिक विषय संयुक्त राष्ट्र के आदेश के तहत पहाड़ी इलाकों में आतंकवाद विरोधी अभियानों पर केंद्रित होगा।

कास पठार

- **महाराष्ट्र के सतारा जिले** में स्थित कास पठार में एक मौसमी झील के तलछट पर एक अध्ययन किया गया।
- महाराष्ट्र के सतारा जिले में स्थित कास पठार, एक यूनेस्को विश्व प्राकृतिक विरासत स्थल है।
- अगरकर अनुसंधान संस्थान (एआरआई) और राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान केंद्र द्वारा किए गए एक अध्ययन में पिछली जलवायु को समझने के लिए पठार में एक मौसमी झील से तलछट की जांच की गई।
- **8,000 साल पुराने** बीपी के तलछट प्रोफाइल ने जलवायु संबंधी हस्ताक्षरों और पारिस्थितिकी तंत्र संशोधनों में अंतर्दृष्टि प्रदान की।
- कास पठार, जिसे कास पत्थर के नाम से भी जाना जाता है, एक जैव विविधता हॉटस्पॉट है जो अगस्त और सितंबर के दौरान अपने मौसमी फूलों के कालीन के लिए जाना जाता है।
- **पुणे से लगभग 140 किमी दूर स्थित,** कास पठार पश्चिमी घाट में स्थित है।
- 2012 में यूनेस्को विश्व प्राकृतिक विरासत स्थल के रूप में नामित।
- पठार का नाम कासा वृक्ष से लिया गया है, जिसे वैज्ञानिक रूप से एलियोकार्पस ग्लैंडुलोसस के नाम से जाना जाता है।
- पठार स्थानिक और दुर्लभ पौधों की प्रजातियों की एक विविध श्रृंखला को प्रदर्शित करता है।

- कास पठार की विशेषता इसकी लेटराइटिक परत है, जो समय के साथ बेसाल्टिक चट्टानों के अपक्षय से बनी है।
- उथले गड्ढे और पेडिमेंट (चट्टान का मलबा) पठार की अनूठी स्थलाकृति में योगदान करते हैं।
- ये भूवैज्ञानिक विशेषताएं क्षेत्र की जलधारणा और जलवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- एआरआई और राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान केंद्र ने कास पठार में एक मौसमी झील से तलछट पर अध्ययन किया।
- जलवायु संबंधी हस्ताक्षरों को डिकोड करने के लिए कार्बन डेटिंग (एएमएस) का उपयोग करके **8,000 वर्ष बीपी** से संबंधित तलछट प्रोफाइल का विश्लेषण किया गया था।
- डायटम, घुन, कैमोएबियन और तलछट विशेषताओं ने जल विज्ञान प्रक्रियाओं और झील संशोधनों में अंतर्दृष्टि प्रदान की।
- तलछट विश्लेषण ने भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून में **लगभग 8,664 वर्ष बीपी** के साथ कम वर्षा के साथ शुष्क और तनावग्रस्त स्थितियों की ओर एक बड़े बदलाव का संकेत दिया।
- पराग और डायटम डेटा ने जलवायु में मीठे पानी से लेकर शुष्क स्थितियों तक , रुक-रुक कर आर्द्र अवधि के साथ परिवर्तन का सुझाव दिया।
- होलोसीन के अंत में, **लगभग 2,827 वर्ष बी.पी.** के दौरान, वर्षा में कमी और कमजोर दक्षिण-पश्चिम मानसून देखा गया।

➔ पराग विश्लेषण और प्रदूषण-सहिष्णु डायटम की उपस्थिति ने झील के **यूट्रोफिकेशन** का संकेत दिया, संभवतः जलग्रहण क्षेत्र में मानव प्रभाव और पशुधन खेती के कारण।

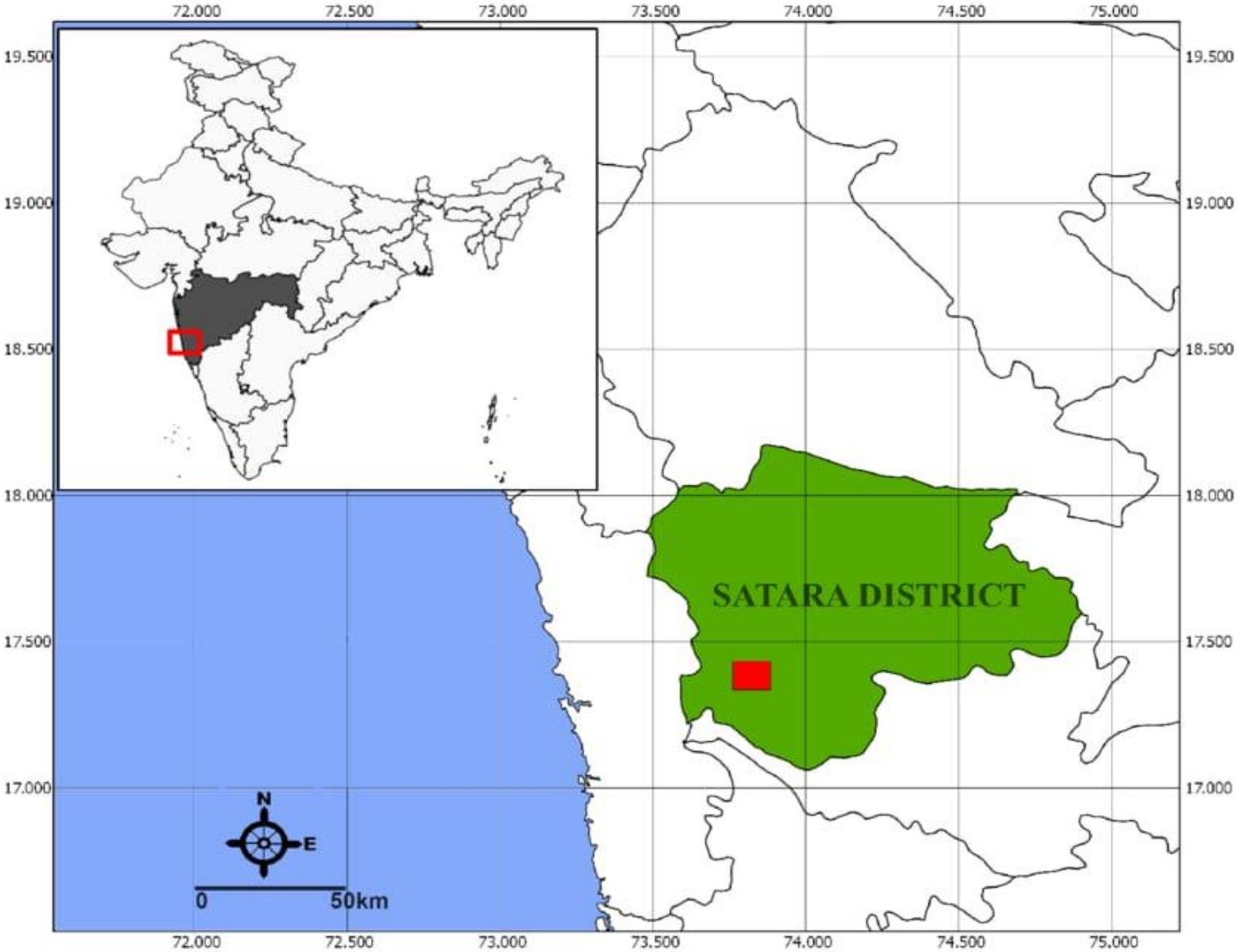

भूमि सम्मान 2023

- **राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू** हाल ही में नई दिल्ली में **भूमि सम्मान 2023 पुरस्कार** प्रदान करेंगी। डिजिटल इंडिया भूमि रिकॉर्ड आधुनिकीकरण कार्यक्रम के मुख्य क्षेत्रों में उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने के लिए नौ राज्य सचिवों और **68 जिला कलेक्टरों** को भूमि सम्मान पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।
- यह कार्यक्रम राज्यों के राजस्व और पंजीकरण से जुडे पदाधिकारियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। अपने उत्कृष्ण कार्य निष्पादन के लिए पिछले 75 वर्ष में पहली बार उन्हें भूमि सम्मान पुरस्कार दिया जाएगा
- भूमि सम्मान योजना विश्वास और भागीदारी पर आधारित केन्द्र और राज्यों के सहकारी संघवाद का एक बेहतरीन उदाहरण है।
- इन व्यक्तियों ने **DILRMP** के मुख्य घटकों की संतृप्ति हासिल करने में उत्कृष्टता हासिल की है, और भूमि रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण और कम्प्यूटरीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **"भूमि सम्मान"** योजना का मुख्य उद्देश्य DILRMP के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन को सम्मानित करना और प्रोत्साहित करना है।
- यह कार्यक्रम भूमि रिकॉर्ड और पंजीकरण प्रक्रियाओं को आधुनिक बनाने, प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और शासन में पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करने में सहायक है।
- भूमि संसाधन विभाग ने **31 मार्च 2024 तक** देश के सभी जिलों में भूमि रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण में 100% संतृप्ति प्राप्त करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है।

- **DILRMP** के मुख्य घटकों में 100% लक्ष्य सफलतापूर्वक हासिल करने वाले जिलों को प्रतिष्ठित प्लेटिनम ग्रेडिंग प्राप्त होती है। यह मान्यता भूमि रिकॉर्ड क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन और आधुनिकीकरण को अपनाने के लिए उनके असाधारण प्रदर्शन और प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- पुरस्कारों के लिए ग्रेडिंग प्रणाली राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा प्रदान की गई प्रदर्शन रिपोर्ट और इनपुट पर आधारित है, जो भूमि रिकॉर्ड के **कम्प्यूटरीकरण और डिजिटलीकरण** में एक मजबूत साझेदारी को बढ़ावा देती है।